This question paper contains 3 printed pages.]

7755 *आपका अनुक्रमांक* .....

M.A. (एम.ए.) / II **A**

HINDI (हिन्दी)

Group (A) - Bhaktikaleen Kavya

वर्ग (क) - भक्तिकालीन काव्य

Paper 14 - Premakhyanak Kavya

प्रश्नपत्र 14 - प्रेमाख्यानक काव्य

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित पूर्व विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निधारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) भंवर बरन भइं देखे बारा। 'जनु बिसहर लुरि भरे भंडारा'।
लांब केस सिर पा 'धुरि' आए। जानु 'सेंदुरे' नाग सोहाए।

बेनी गूंदि 'जड़हि ओरमाबई'। लहर 'चढ़हि बिसु
'मसतग धावइ'॥
'देखत' बिसु 'चढ़' मंग न मानइ। गारुरि तासु उतारु न' जानइ।
'जूरा छोरि झार सों नारी।' दिवसेहिंरति' होइ अंधियारी।

अथवा 7

मैं 'तुम्हं' आगें सब दुख 'नीरा'। 'भरि गंग बुड़ी को लावइ' तीरा।
'पिय' गुनवंते गुन दै 'तोरी' परी नांउ 'भरी गंग' महं मोरी।
अब रे कुंड गहिरे महं परी। बेगि आउ सब जलहर भरी।
तीर न लागइ बिन कंड हारे। 'करिय' कहां जो टेकि 'संभारें।
नेह क साइर 'अति' औगाहा बोहित 'बुड़इ न पावइ' थारा।

(ख) पूछिसि कौन रूप सो देखा, केहि दिन कौन भाँति कोहि लेखा।
जोगिन रहसि रहसि जस जानी, आदि अंत लहुँ कथा बरवानी॥
सुनि चित्रावलि हिय संतोखा, निहचैं जानि गयो जिय धोखा।
कहासे कि हौं तुम्ह ऊपर बारी, मोरे दुख बहु गए दुखारी॥
अब सुख करहु बैठि यहि ठाई, करिहौं सेव जगत जब ताईं।
मैं सब इच्छ तुम्हार पुराई, तुम जग इच्छा पुरवहु जाई॥

अथवा 7

सुनि रस बात सखीं औघाईं। देखि चरित चाँद एहिं आईं॥
सबहि भाँति सो दरसन सोहा। इहै भगति पै जगत बिमोहा॥
अति सरूप सुंदर सुठि लोनां। गौर बरन सरि पूजि न सोनां॥
गदा, चक्र औ संख सुहावा। रुद्र जाप कैं बंसि बजावा॥

अबहीं बक छोहन भा आई। एहिं रे बयस ताप साध न जाई॥
नैन दिष्टि सों जाइ न छूआ। सहस करां सूरुज जनु ऊआ।

2. 'चान्दायन' के कथानक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

''यह मरण ही लोरिक की प्रेम गाथा का सबसे बड़ा सम्बल है। यही हिन्दी प्रेमकथाओं को अमरत्व प्रदान करता है।'' 'चांदायन' के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

12

3. ''सौन्दर्यानुभूति सूफी तत्त्वदर्शन का एक सर्वमान्य आधार है।'' 'चित्रावली' के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'मृगावती' के प्रबन्धत्व का विवेचन कीजिए।

12

4. 'कान्हावत' के कथानक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'कान्हावत' की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

12